॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु।

हे प्रभु! जिस शुभ इच्छा से हम तेरा आह्वान करें, वह हमारी पूर्ण हो।

वर्ष ३३, अंक ५ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार ९ नवम्बर, २००९ से १५ नवम्बर, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११० वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं १ से ८ तक

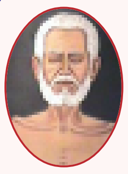

अद्वितीय 'गुरु-शिष्य' प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मथुरा' सम्पन्न

विस्तृत रिपोर्ट एवं चित्रमय झांकी अगले अंकों में प्रकाशित की जाएगी।

समसामयिक चर्चा

वन्देमातरम् का विरोध कितना उचित?

देवबन्द में सम्पन्न हुए जमीयत उलेमा–ए–हिन्द के तीसवें अधिवेशन की खबरें पढ़कर जहाँ कुछ प्रसन्नता हुई, वहीं आम भारतीय के हृदय में खिन्नता की भावना भी पैदा हुई। यह बहुत अच्छी व सौहार्द बढ़ाने वाली बात है कि इस अधिवेशन के समस्त उलेमाओं ने एक स्वर से जिहाद के नाम पर फैलाए जा रहे आतंकवाद का विरोध किया है। एक लम्बे समय से रह रहकर ऐसे सौहार्द बढ़ाने वाली भावनाएं विचारशील मुस्लिम संगठनों के माध्यम से मिलती रही हैं। मुम्बई के आतंकवादियों को कब्रिस्तान में नहीं दफनाने देने का निर्णय निश्चय ही राष्ट्रीय भावनाओं का ज्वलंत प्रमाण था। अभी–अभी समाचार मिले हैं कि जम्मू–कश्मीर के कुछ मुस्लिम महानुभावों ने एक जीर्ण शिवमंदिर के निर्माण में सहयोग देकर एक बहुत ही अच्छा और सद्भावनापूर्ण कार्य किया है। ऐसी समस्त घटनाओं व भावनाओं का हर राष्ट्रभक्त सम्मान करता है। यहाँ इसे साम्प्रदायिक सद्भावना न कहकर राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए पारस्परिक सहयोग की भावना के रूप में देखना अधिक उचित होगा। यह पारस्परिक सहयोग परिवार से लेकर समाज, राष्ट्र व विश्व की सुख शांति व समृद्धि की पहली शर्त है। जब तक हम 'अपना कहा जाने वाला कुछ अंश' दूसरे परिवारजनों, पड़ोसियों व राष्ट्र–बन्धुओं के लिए नहीं त्यागते, तबतक वह अपनापन नहीं पैदा होता, जिसकी हमें आवश्यकता है। हमारे मुस्लिम विचारशील सज्जन इस पथ पर चल रहे हैं तो हमें उनका स्वागत करना ही चाहिए।

इस अधिवेशन का एक विवादास्पद निर्णय भी सुनने में आ रहा है। वंदेमातरम् का विरोध करना तनिक चुभने वाला निर्णय है। पता नहीं वन्देमातरम् में ऐसा क्या है? वन्देमातरम् का अर्थ है– 'मैं आपके सामने नतमस्तक होता हूँ, ओ माता!' उन्हें आपत्ति है कि हम खुदा के अतिरिक्त किसी को झुकते नहीं। उक्त अधिवेशन में वक्ताओं ने अपनी राष्ट्रभक्ति के अन्य घटक गिनाए। राष्ट्रभक्ति को मापने का कोई पैमाना किसी के पास नहीं है, यह पूर्णतः व्यक्तिगत प्रश्न है, जिसे वही भलीभांति जानता है। वन्देमारतम् की बात करें तो यह राष्ट्रगान स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही राष्टभक्ति का पर्याय बन गया था। इसे गा–गाकर राष्ट्रवीरों ने फाँसी के फन्दे चूमे। ***यह सच हो सकता है कि सभी वन्देमातरम् का गान करने वाले राष्ट्र भक्त न हों, लेकिन किसी प्रकार की आड़ लेकर इसे न गाने का आग्रह करना संदेह को जन्म देता ही है।*** कौन बुद्धिमान् यह स्वीकार करेगा कि कोई धर्म अपने माता–पिता व मातृभूमि की वन्दना करने व सम्मान करने की अनुमति नहीं देता? हर एक धर्म में एक अद्वितीय परमेश्वर की भक्ति व उपासना का विधान है, लेकिन कण–कण में व्यापक परमात्मा, खुदा या गॉड के अतिरिक्त किसी के सामने झुको ही मत, किसी का सम्मान ही न करो– यह बात समझ में नहीं आती। परमात्मा के स्थान पर किसी को मत पूजो, यह कहना एक अलग बात है तथा परमात्मा के अतिरिक्त किसी को मत झुको, यह कहना दूसरी बात है। मनुष्य के ऊपर जिस–जिस का जितना उपकार होता है, उस–उस के सामने नतमस्तक होना उसका धर्म बनता है, अधर्म नहीं। भारतीय संस्कृति का आदर्श है ***'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी अर्थात् जन्म देने वाली माँ और जन्म भूमि ये दोनों स्वर्ग से भी महान् हैं।'*** हम अपने बड़े–से–बड़े सुख को जन्म देने वाली माँ और जन्मभूमि की सुरक्षा व स्वाभिमान के लिए त्याग सकते हैं। जननी माँ और जन्म भूमि को परमेश्वर के स्थान पर तो कोई भी नहीं पूजता। एक व्यक्ति अपने पिता का भी सम्मान करता है, तथा अन्य चाचा, ताऊ व पड़ौसी बुजुर्गों का भी सम्मान करता है। कौन नहीं जानता कि शेष चाचा, ताऊ आदि को वो पिता के स्थान पर कभी नहीं मान सकता। पिता के स्थान पर न मानने का अर्थ यह भी नहीं कि वह किसी का मान–सम्मान करे ही नहीं। इस सूक्ष्म तथ्य को हमारे मुस्लिम बन्धु समझ लें तो उन्हें 'वन्देमारतम्' गाने में आपत्ति न दिखे।

रही बात यह कि मुस्लिम जगत् में एक खुदा के अतिरिक्त किसी को सिर नहीं झुकाते। यहाँ तक कि इस्लाम माँ के सामने तथा पैगम्बर के भी सामने नतमस्तक होने की आज्ञा नहीं देता। यह समझ का अन्तर हो सकता है। हम यह बता चुके हैं कि खुदा के स्थान पर किसी को न पूजना, किसी के सामने उसे खुदा मानकर न झुकना एक बात है तथा खुदा के अतिरिक्त किसी के भी सामने न झुकना यह दूसरी बात है। एक ईश्वर के स्थान पर किसी अन्य की पूजा–भक्ति करना तो सभी आस्तिक मत पन्थों में गलत ही माना जाता है। इतना होने पर भी सभी मत पन्थों में यह बुराई जड़ें जमा चुकी हैं। जहाँ तक इस्लाम का प्रश्न है तो इस्लाम में कब्र पूजा क्या है? मौलाना अशरफ अली अपने कुरान भाष्य में लिखते हैं–'इस जमाने के मुशरिकों का तो यह हाल है कि हर हालात की सख्ती हो या नेमत, औरों को ही पुकारते हैं, कोई शेख अब्दुल् कादिर को पुकारता है, कोई शाह अब्दुल् हक्क को फिर बावजूद इस शिर्क के अपने आप को मुसलमान का मुसलमान कहलवाते हैं।"

प्रसिद्ध कवि मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली अपनी मुसद्दस में लिखते हैं–

नबी को जो चाहे खुदा कर दिखाएँ,
इमामों का रुतबा नबी से बढ़ाएँ
मजारों पे दिनरात नजरें चढ़ाएँ,
शहीदों से जा–जा के माँगे दुआएँ।
न तौहीद में कुछ खलल इससे आये,
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए।।

ये दो उदाहरण बताते हैं कि इस्लाम में खुदा के स्थान पर अन्य की पूजा उपासना एवं उनसे माँगने की प्रवृत्ति घर कर गई है।

– ***शेष पृष्ठ 8 पर***

शोक समाचार

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य को मातृशोक

दैनिक याज्ञिक माता सरला आर्या नहीं रहीं

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 15 नवम्बर, 2009 को आर्यसमाज मन्दिर, 15–हनुमान रोड नई दिल्ली–1 के सभागार में मध्याह्न 2.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक आयोजित की गई है।

विस्तृत समाचार पृष्ठ 5 पर

दर्शन व्याख्या - 19

न्यायदर्शन के अनुसार 'इन्द्रिय'

गतांक से आगे :–

इन्द्रियः आत्मा और शरीर के उपरान्त तीसरा 'प्रमेय' है इन्द्रिय। इन्द्रियों का आश्रय शरीर है, जहाँ बैठ कर इन्द्रियाँ पदार्थ के लिए चेष्टा करती हैं। इन्द्रियाँ ही अपने विषयों को ग्रहण करती हैं। जिनसे भूतों (प्राणियों) को गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द का ज्ञान होता है वे इन्द्रियाँ हैं नासिका (घ्राण), जिह्वा (रसना), चक्षु, त्वचा और श्रोत्र (कान) – **'घ्राण–रसन–चक्षुस्त्वक्श्रोत्राणीन्द्रियाणि भूतेभ्यः।'** (न्याय0 1–1–12) ये इन्द्रियाँ किनसे उत्पन्न होती हैं – इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देते हुए महर्षि गौतम ने लिखा है 'भूतेभ्यः' अर्थात् पंच भूतों से और वे पंच भूत हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाशः 'पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशमिति भूतानि।' (न्याय0 1–1–13) इन पंच भूतों में से पृथ्वी से नाक, जल से जिह्वा (जीभ, रसना) अग्नि से चक्षु (आँख) , वायु से त्वचा (खाल) और आकाश से कान उत्पन्न है। अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इन पंच भूतों के वे कौन से गुण हैं जिन्हें इन्द्रियां ग्रहण करती है? इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर दर्शनकार ने इन शब्दों में दिया है – ***गन्ध–रस–रूप–स्पर्श–शब्दाः पृथिव्यादिगुणास्तदर्थाः।'*** (न्याय०1/1/14) अर्थात पृथ्वी, जल,अग्नि, वायु, और आकाश के गुण कमशः गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द हैं। पृथिव्यादि के ये गुण ही इन्द्रियों के अर्थ (विषय) कहलाते हैं। स्पष्ट शब्दों में गन्ध नासिका का, रस रसना (जिह्वा) का, रूप चक्षु का, स्पर्श त्वचा का और शब्द श्रोत्र (कान) का विषय है।

इन्द्रियाँ भौतिक हैं या अभौतिक – इस विषय पर भी महर्षि गौतम ने विस्तार से विचार किया है और पूर्वपक्ष के रूप में यह विचार उपस्थित किया है कि चूँकि चक्षु समीपस्थ पदार्थ को ही नहीं, दूरस्थ सूर्य– चन्द्रादि को भी देखने में सक्षम है, जबकि अन्य इन्द्रियाँ निकटस्थ पदार्थों के अपने अपने विषयों को ग्रहण करती हैं; जैसे नासिका किसी पदार्थ के समीप आने पर उसकी गन्ध को, रसना चखे गये पदार्थ के स्वाद को, त्वचा छूने पर छुए गये पदार्थ की कोमलता–कठोरता आदि को अनुभव करती है। दूरस्थ पदार्थ के साथ इन्द्रिय (चक्षु) का सम्बन्ध होने से यह लगने लगता है कि इन्द्रिय विभु अर्थात् व्यापक है और इसीलिए अभौतिक भी है, क्योंकि जो पदार्थ विभु (व्यापक) होता है, वह अभौतिक भी होता है, अतः यह संदेह स्वाभाविक ही है कि इन्द्रियाँ भौतिक हैं या अभौतिक? आँख की पुतली के उदाहरण से पूर्वपक्ष के रूप में इस संशय को इन शब्दों में उपस्थित किया है – ***'कृष्ण सारे सत्युपलम्भाद् व्यतिरिच्य चोपलम्भात् संशयः।'*** (न्याय० 3–1–30) आँख में काले रंग की पुतली के ठीक होने पर ही दूर –पास की वस्तुएँ दिखलायी पड़ती है, किन्तु पुतली के खराब हो जाने से वे दिखलायीं नहीं पड़ती, इससे यह सिद्ध होता है कि आँख में स्थित पुतली और आँख भी भौतिक इन्द्रिय ही है, किन्तु दूरस्थ नक्षत्रादि को देखने के कारण उसके अभौतिक होने का संशय भी बना रहता है।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्) ,
बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058 क्रमशः

The Sixteen Rituals of Aaryas

Continued from Last Issue.

As per the materialistic thinking, a human is no more than an image of hunger and thirst. The Vedic thought, on the other hand, does not assume human existence to be mere bodily existence. The plans of dam construction, river digging and road/rail-laying should also doubtlessly carryon. But from the spiritual point of view, these are extremely preliminary steps and are nowhere near the commencement of the program of remodeling of man on a spiritual grounding.

The actual purpose of tne Vedic culture - the purpose for which the culture was born - is to remodel man by performing rituals. We build dams, dig out the streams, construct roads and lay railway lines. But where is the man for whom all this is done? Which kind of plan do we have for him - five-year or the ten-year one? If there exist established railway networks, if the convenience of motorcars reaches every household, if water reaches every comer of land, if the yield becomes unlimited and yet the man, the user of all these resources, fails to be truthful, honest, empathetic towards others, and is not virtuous, is corrupt and of adulterous conduct, then what is the use of these trains and cars, streams and dams? And is this not the situation today? Is the increasing dazzle of wealth and splendor not accompanied by the degradation of the very human being who is the master of this wealth? Where is man? Where is that human who has humanity - the man who casually throws aside the huge and complicated heaps of temptations that arise in his way? The biggest program of Vedic culture and the focus of this program is the reconstruction/remodeling of man by performing rituals.

The Vedic culture prepared a program for the modeling of man. For the success of this program, the custom of rituals was popularized. It is these rituals that make a man worthy. How many innumerable processes has the soul crossed on its journey across several births?

To be continued....

गतांक से आगे :–

देववाणी : संस्कृत

संस्कृतविकासे बाधानां परिहाराणाञ्च चिन्तनम्

(7) संस्कृतं केषाञ्चित् नविशेषवर्गाणां अथवा जातेः भाषा नास्ति, प्रत्येकं भारतीयस्य भाषैषा वर्त्तते। ***– फखरूद्दीन अली अहमदः***

(8) संस्कृतध्ययनेन विना कोऽपि जनः भारतीयः तथा तात्त्विकरूपेण विद्वान् न भवितुमर्हति। ***– महात्मा गांधिः***

(9) जनैः न ज्ञायते यत् संस्कृतं तेषां मस्तिष्कं कियत् सीमापर्यन्तं प्रभावि करोति। संस्कृतसाहित्यं एकस्मिन्नर्थे राष्ट्रियं परन्तु अस्योद्देश्यं सार्वभौमं विद्यते। एतदेव कारणं यत् संस्कृतं तेषां जनानामपि ध्यानमाकर्षयति ये के च विशिष्टसंस्कृतेऽनुरागिणः न सन्ति। ***– डॉ0 एस. राधाकृष्णनन्***

(10) यदि कश्चन मां भारतस्य महत्तमनिधेः सर्वोत्कृष्टन्यासस्य विषये पृच्छेत् तर्हि अहं निर्द्वन्द्वरूपेण वक्तुमर्हामि–संस्कृतभाषा साहित्यञ्च एवं तत्सम्बन्धि सम्पूर्ण वाङ्मयं न्यासमेकं वर्त्तते। यावदियं स्थास्यति अस्माकं जीवनञ्च प्रभावितं करिष्यति तावत् पर्यन्तं भारतस्याधारभूतं वैशिष्ट्यञ्च विधास्यति। यदि भारतीयजातिः बुद्धं, उपनिषदः तथा च महान्ति महाकाव्यानि (रामयणं महाभारतम्) विस्मरिष्यति तर्हि भारतं भारतं न भविष्यति।। ***– जवाहरलाल नेहरूः***

(11) एवं प्रकारेण संस्कृतं भारताय राष्ट्रियैकतायाः प्रतीकं सारञ्च वर्त्तते तथा सा ऐशियाया एवं विश्वस्य च संयोजनस्य सूत्रमस्ति। केवलं सैद्धान्तिकपूजायाः वस्तु नास्ति अपितु एका जीविता समृद्धा भाषा अस्ति। संस्कृतस्याध्ययनेन प्रसारणेन च न केवलं कालिदासं प्रति श्रद्धाञ्जलिः भविष्यति प्रत्युत आत्मानः सज्जीकरणास्य उपक्रमेऽपि भविष्यति।। ***– के. आर. नारायणः***

उपर्युक्तानां विदुषां विचारेषु संस्कृतभाषा एतादृशी भाषा प्रतिभाति यया विना भारतस्य कोऽपि जनः यवनः, सिक्खः, खिस्तीयः, पारसी, जैनः, बौद्धः, इतोऽप्यग्रे भारतीयः न भवितुमर्हति। बहवः विद्वांसः संस्कृतविषये 'एवं भवेत् एवं भवितव्यम्' एतत्तु ब्रुवन्ति परन्तु समर्थो भूत्वाऽपि न कोऽपि एतादृशं साहसं प्रदर्शयति येन संस्कृतभाषायाः अध्ययने रुचिः आकर्षणञ्च जागृयात् तथा च तेषां वृत्तेः व्यवस्थाऽपि स्यात्।

परञ्च तत्कालं स्मारयामि यत् यदा त्रिभाषासूत्रात् संस्कृतस्य गौरवम् अपहातुं राजनेतारः कटिबद्धाः प्रतिबद्धाश्च आसन् तस्मिन् समये संस्कृतज्ञैः संस्कृतानुरागिभिश्च सर्वैः जनैः मिलित्वा दिल्ल्यां भारतद्वारे अस्य विरोधे आन्दोलनं कर्तुं निर्णीतम्, तत् सर्वे जानन्ति। पुनः बहुकालपर्यन्तं न्यायालये अभियोगः चलितः तदा अक्टूबरमासस्य चतुर्थे दिनांके एकोनविंशत्युत्तरचतुर्नवतिखिष्टीयाब्दे संस्कृतपक्षे बहुशोभमः, तर्कोपेतः, न्यायोचितः, युक्तियुक्तः, गौरववर्धापनः निर्णय उच्चतमन्यायालयस्य विद्वद्भिः न्यायाधीशैः प्रदत्तः। ततः प्रभृति अद्य पर्यन्तं कुत्राऽपि विद्यालयेषु संस्कृताध्ययनस्य समानरूपेण सर्वान् छात्रान् सर्वाः छात्राश्च नवमदशमकक्षायाम् अनिवार्यरूपेण अध्ययनार्थम् अवसरः न दरीदृश्यते।

– डॉ. जितेन्द्र कुमारः, प्राध्यापक, अजमेरस्थ दयानन्द महाविद्यालयीयः, अजमेर (राजस्थान) क्रमशः

बोध कथा

ज्ञानी जग में रहत भी लिप्तमान हो नाहिं

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

गतांक से आगे :–

ज्ञात हुआ, बोझ ढोते–ढोते मर गया। साधु ने फिर अपने योगबल से ढूंढ़ा। देखा, वह अपने घरके द्वार पर कुत्ता बनके बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा – 'अब तो बोझ ढोने की बात भी नहीं रही। अब चल तुझे स्वर्ग ले चलूं।'

कुत्ते के शरीर में बैठे लाला ने कहा – 'अरे कैसे ले चलेगा! देखता नहीं कि मेरी बहू ने कितने आभूषण पहन रखे हैं? मेरे लड़के घर में नहीं है, यदि कोई चोर आ गया तो बहू को बचाएगा कौन? नहीं बाबा! तुम जाओ, अभी मैं नहीं जा सकता।'

साधु चला गया। एक वर्ष बाद आकर उसने देखा कि कुत्ता भी मर गया है। उसने फिर योगबल के द्वारा उसे खोजा। ज्ञात हुआ कि वह अपने घर के पास बहने वाली गन्दी नाली में मेंढक बन के बैठा है। साधु ने उसके पास जाकर कहा – 'देखो लाला! क्या इससे बड़ी दुर्गति भी कभी होगी? कहां–से–कहां पहुंच गए हो तुम! अब भी मेरी बात मानो। आओ तुम्हें स्वर्ग में ले चलूं।'

मेंढक ने चिल्लाकर कहा –'चला जा यहां से! क्या मैं ही रह गया हूं स्वर्ग में जाने के लिए? और लोग क्या मर गए हैं? उनको ले जा। मुझे यहीं पड़ा रहने दे। यहां पोतों को आते–जाते देखकर प्रसन्न होता हूं। स्वर्ग में क्या तेरा मुख देखा करूंगा?'

यह है कर्म के चक्र में फंसे रहने का परिणाम! मोह आत्मा को नीचे ही नीचे धकेलता जाता है। नहीं, इस प्रकार के कर्म मत करो। कर्म करो अवश्य, मोह और ममता से परे हटकर।

जूं जल के भीतर कंवल रहे,
जल में डूबे नाहिं।
ज्ञानी जग में रहत भी,
लिप्तमान हो नाहिं।।

वेद के नाम पर कोरी लफ्फाजी

मात्र शब्दाडम्बर एवं निरर्थक कल्पना विलास

राजस्थान पत्रिका (जयपुर) के दिनांक 9 अगस्त, 2009 के रविवारीय परिशिष्ट में वेद विषयक जो लेख पत्रिका के सम्पादक का छपा है उसमें बिना सोचे–विचारे यह फैसला दे दिया गया है कि 'वेद को हम अब तक समझ नहीं पाये, अनुमान से ही उसका अर्थ लगाते रहे, वेदार्थ करने वाले सब भ्रमित हैं।' इसका सीधा–सा निष्कर्ष निकला कि ब्राह्मणों (ग्रन्थों) तथा वेदांगों का अध्ययन करने के पश्चात् वेदार्थ ज्ञान में प्रवृत्त होने वाले याज्ञवल्क्य, ऐतरेय, महीदास, यास्क, पाणिनि आदि सभी ऋषियों का परिश्रम व्यर्थ था, वे वेद को कतई नहीं समझे। स्कन्द स्वमी से लगाकर 19वीं शताब्दी के दयानन्द सरस्वती तक के वेद भाष्यकारों का वेदविषयक परिश्रम व्यर्थ था, सायण ने वर्षों की मेहनत से सम्पादक मण्डली बनाकर चारों वेदों, कतिपय आरण्यकों, ब्राह्मणों आदि का जो भाष्य तैयार कराया वह निरर्थक था, पश्चिम में मैक्समूलर, मैकडानल, वेवर, हिरनी आदि ने जो वेद पर श्रम किया वह बेकार था, भारत में रहकर विलसन तथा ग्रिफिथ ने जो वेदानुवाद किये और उनसे वेदार्थ को जैसा कुछ समझा गया वह फिजूल था, आज जो भारत तथा संसार के अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में सैंकड़ों छात्र तथा अध्यापक वेद के पठन–पाठन में लगे हैं, वे सब भ्रमित हैं। वेद के सामान्य अर्थ ज्ञान के लिए आर्थर एन्थनी, मैकडानल ने जो वैदिक रीडर तथा वैदिक व्याकरण लिखा वह बेकार का श्रम था। वेदों पर किये गये शताब्दियों के श्रम का यह घृणित अवमूल्यन!

पत्रिका के सम्पादक तथा इस लेख के लेखक का फैसला है कि वेद केवल पढ़ने–पढ़ाने का विषय बनकर रह गये हैं। उन्हें याद दिलाना आवश्यक है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि ने षडंग वेद का निष्कारण (फल की आसक्ति न रखकर) अध्ययन ब्राह्मण (विचारशील) का परम धर्म (कर्त्तव्य) बताया है तो वेद को पढ़ने–पढ़ाने का विषय मानने में लेखक को अपत्ति क्यों?

वेद के अध्ययन से पौराणिक देवी–देवताओं के अस्त्र–शस्त्र, वाहन, स्वरूप आदि का क्या सम्बन्ध है, यह लेखक ने स्पष्ट नहीं किया।

वेद को समझने के लिए लेखक ने भाषा (कौन–सी?), शब्द, अर्थ, प्रत्यय की जानकारी तो जरूरी बताई, किन्तु वेदार्थ में परम सहायक यास्काचार्य के ग्रन्थ निरुक्त का उल्लेख ही नहीं किया। ***ध्यान रहे कि वेदों में आये शब्द यौगिक हैं जिनके अर्थ को जानने के लिए धात्वर्थ को जानना आवश्यक होता है, तभी अग्नि, इन्द्र, गौ, ऊषा, सविता, आदि शब्दों के विभिन्न अर्थों का परिज्ञान होता है।*** इसमें साधारण संस्कृत ज्ञान तथा अमरकोष सहायक नहीं होता।

इसके आगे लेखक कल्पना को छूट देता हुआ, कोरे शब्दाडम्बर तथा वाचालता से वेद को लेकर जो अनर्गल वर्णन करता है, उस पर तो कोई टिप्पणी करना भी व्यर्थ है, क्योंकि उसका यह सारा लेखन अनर्गल, पूर्वापर से असम्बद्ध, कोई अर्थ देने में असमर्थ मात्र वाणी विलास है, जिसका वेदों के तात्त्विक अर्थ से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेखक की यह अनोखी व्याख्या देखें तथा आप भी इसका कोई संगत अर्थ निकालें। निम्न सारे उद्धरण उक्त लेखक के हैं–

1. "जिनको निदान विद्या आती है वे भूत पदार्थों के माध्यम से सृष्टि के सिद्धान्त को समझ सकते हैं।" लेखक खुलासा नहीं करता कि यह निदान विद्या क्या है और वेद में कहाँ आई है?

2. "कमल का अध्ययन करके ब्रह्मा प्राण को अथवा मूषक का अध्ययन करके गणपति प्राण को समझ सकते हैं।" पूछा जा सकता है कि यह 'कमल' वेद में कहाँ है और किस मूषक (चूहों) को समझकर गणपति (प्राण) को समझा जा सकता है। ध्यान रहे कि यजुर्वेद के अश्वमेधाध्याय में 'गणपति' का उल्लेख तो मिलता है किन्तु वहाँ किसी मूषक की चर्चा नहीं है।

सत्य यह है कि वेद के इस विचित्र विवेचन के सूत्रधारों ने ग्रन्थ रूपी चारों वेदों को तो मात्र 'पुस्तक वेद' बताया जबकि उनके विचार से वास्तविक वेद तो आकाश में विद्यमान हैं। अब आकाश में जाकर इन वेदों को धरती पर कौन लायेगा? इसके आगे तो उन्होंने लिखने की सारी सीमाएं लांघ दीं। अतः उनके इन वायवीय कथनों पर कोई आलोचनात्मक टिप्पणी न कर हम इतना ही लिख देते हैं कि इस सारी अनर्गल वाक्य रचना का अर्थ या तो उनके गुरु समझते होंगे या 'खुदा' ही समझता होगा।

लेखक के अर्थहीन वाक्य–

"जब कुछ नहीं था, आकाश था, उसकी तन्मात्रा नाद थी। हवा थी उसकी तन्मात्रा स्पर्श थी। ऋषि प्राण (आग्नेय) थे। जल मात्रा (सोम) प्रबल थी, अग्नि दुर्बल थी अतः स्वरूप कोई नहीं था। परन्तु स्पन्दन थे। ये स्पन्दन ही माया कहलाते हैं।..........आकाश में फैला सारा पदार्थ ब्रह्म है और उसकी शक्ति स्पन्दनरूप माया है।"

हमारी टिप्पणी–

सारा उद्धरण ही अस्त, व्यस्त, अर्थहीन तथा प्रमादी पुरुष के कथन के तुल्य है। लेखक द्वारा प्रयुक्त तन्मात्रा, माया, ब्रह्म आदि क्या हैं? क्योंकि तन्मात्रा का उल्लेख सांख्यदर्शन में आया है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में 'माया' को प्रकृति का पर्याय कहा गया है– ***'मायां तु प्रकृतिं विद्यात्'*** और माया के स्वामी (परमात्मा) को महेश्वर कहा गया है। शंकर निरूपित ब्रह्म और माया के प्रसंग सर्वथा भिन्न हैं। इन्हें वेदों में तलाशना व्यर्थ है।

कुछ और अनर्गल कथन–

"बिन्दु का केन्द्र ऋक् है, परिधि साम है, बीच का क्षेत्र यजु है, यही वेद है।" लेखक बताए कि इन कल्पना प्रसूत समीकरणों का आधार क्या है?

आगे लेखक ने भूं भुवः स्वः महं आदि सप्तलोकों की चर्चा के प्रसंग में सूर्य को परमेष्ठी का उपग्रह बताया। वह यह नहीं बताता कि यह परमेष्ठी क्या है? कुछ और बानगी देखें ''अब एक और सिद्धांत भी है कि परमेष्ठी मण्डल भी स्वयं भू–लोक की परिक्रमा करता है.....स्वयं भू का ब्रह्म तपः लोक में अपना स्वरूप ग्रहण करता हुआ परमेष्ठी तक पहुँचता है। यह बिन्दु यहाँ अव्यपय पुरुष कहलाता है। स्पन्दनों से ही इसका निर्माण हुआ है। यही बिन्दु इन्हीं स्पन्दनों के द्वारा स्वरूप बदलता हुआ आगे बढ़ता जाता है।" यह उद्धरण नमूने मात्र हैं। वेदार्थ के नाम पर यह शब्दाडम्बर तथा वाग्जाल सर्वप्रथम जयपुर के राजसभा पण्डित मधुसूदन ओझा ने रचा था। उनके गुरु शिवकुमार शास्त्री (दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला के वैतनिक शिक्षक) ने अपने शिष्य ओझा को कृतप्रतिज्ञ किया था कि वह अपनी मनीषा का प्रयोग कर स्वामी दयानन्द के वेदवाद को ध्वस्त करेगा– (राजस्थान पत्रिका का एक पुराना लेख) और ओझा जी की इसी विचित्र ऊहा प्रधान शैली का उपयोग उनके शिष्य मोतीलाल शास्त्री ने किया, वहीं से यह वेद पद्धति 'पत्रिका' के संस्थापक, वर्तमान सम्पादक आदि में संक्रमित हुई। इनके अनुसार वे वेदार्थ के आध्यात्मिक अर्थ करने वाले ऋषि दयानन्द योगी, अरविंद आदि वर्तमान तथा आनन्द तीर्थ आदि पुराकालीन वेदार्थकर्त्ताओं का वेद विषयक श्रम निष्फल था। वेद के प्रामाणिक अर्थ कर्त्ता तो ओझा जी तथा उनके चेले ही हैं।

– डॉ० भवानी लाल भारतीय
3/5, शंकर कॉलोनी,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

महर्षि दयानन्द सरस्वती
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
www.swamidayanand.com

ब्रह्म–सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (6)

प्रतिज्ञाऽहानिरव्यतिरेकाच्छब्देभ्यः ॥६॥

अर्थ – (प्रतिज्ञा अहानिः) प्रतिज्ञा की हानि नहीं होती (अव्यतिरेकात्) व्यतिरेक (भिन्नता) न होने से (शब्देभ्यः) शब्दों से। प्रतिज्ञा की हानि इस कारण से नहीं होती क्योंकि जो कुछ भी उत्पन्न होता है, वह सब आकाश से भिन्न नहीं है क्योंकि आकाश व्यापक है। उसकी व्यापकता शब्दों से जानी जाती है।

भावार्थ – आकाश को नित्य मानने पर प्रतिज्ञा की हानि नहीं होती क्योंकि आकाश व्यापक पदार्थ है। अतः सभी उत्पन्न पदार्थों का आकाश से निश्चित रूप में संबंध रहता है। जैसा कि इससे पूर्व बताया था कि तैत्तिरीय उपनिषद् (२/६) में कहा है – ***"स तपस्तप्त्वा इदं सर्वमसृजत यदिदं किञ्च।"***

बनाया–जो कुछ भी यह है। यहाँ जो कुछ में आकाश भी शामिल है। अब यदि यह मान लें कि आकाश उत्पन्न नहीं होता तो यह प्रतिज्ञा भंग हो जाएगी कि उसने इस सबको बनाया।

आकाश के नित्य होने पर भी उसकी उत्पत्ति का गौण रूप में प्रयोग होने पर न तो प्रतिज्ञा की हानि होती है और न ही शास्त्रीय वाक्यों में परस्पर विरोध ही है।

सूत्रकार के अनुसार प्रतिज्ञा इसलिए भी भंग नहीं होती क्योंकि आकाश में और दूसरे महाभूतों में कोई भेद नहीं है, क्योंकि जैसे बह्म ने अन्य महाभूतों को रचा वैसे ही आकाश को भी उत्पन्न किया। शास्त्रों के अनुसार आकाश भी प्रकृति का विकार है। सांख्य में कहा है – ***"तन्मात्रेभ्यः स्थूलभूतानि"*** अर्थात् पाँच तन्मात्राओं से स्थूलभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी) उत्पन्न हुए।

उक्त प्रमाण से सिद्ध होता है कि जैसे ब्रह्म से अन्य उत्पन्न हुए वैसे ही आकाश भी उसके द्वारा उत्पन्न किया गया है। शब्द प्रमाण से भी आकाश और अन्य महाभूतों की उत्पत्ति में कोई भेद (व्यतिरेक) नहीं पाया जाता। इसलिए प्रतिज्ञा भंग होने का प्रश्न नहीं उठता।

– सूत्रकार विस्तृत पूर्वपक्ष को ध्यान में रखते हुए अगले सूत्र में समुचित समाधान करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी,नई दिल्ली–58

समस्त आर्यसमाजें ध्यान दें!

125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न सम्मानों हेतु दिल्ली के

आर्यसमाजों/गुरुकुलों/आर्यवीर दल/वीरांगना दल/शिक्षण संस्थाओं से नाम भेजें

दिल्ली में आयोजित क्षेत्रीय बैठकों में दिए गए विभिन्न आधारों पर दिए जाने वाले सम्मानों के लिए अपनी आर्यसमाज से नाम यथाशीघ्र, '**संयोजक**' के नाम '**125वां निर्वाण वर्ष सम्मान चयन समिति, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1, दूरभाष** – 011–23360150, 23365959, 23343737' के पते पर भेजें। अधिक जानकारी के लिए समिति कार्यालय के उपरोक्त नम्बरें पर सम्पर्क करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 18 स्लिप्स का एक सैट मात्र 5/– रुपये प्रति शीट।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित

छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की संगीतमय प्रस्तुति

"गुरुदेव दयानन्द" ऑडियो सीडी

सुन्दर मधुर भजनों का मनभावन संकलन

केवल 20/- रुपये में

निर्वाण वर्ष की स्मृति घड़ियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष की स्मृति हेतु तैयार घड़ियां चार आकारों में तैयार कराई गई हैं। सुन्दर, आकर्षक डिजाइन एवं गोल्डन कलर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ तैयार ये घड़ियां मात्र 100/– में बड़े आकार में तथा 75/– रुपये में छोटी उपलब्ध हैं। इसके अलावा आर्यसमाजों के सत्संग हॉल में लगाने के लिए सुपर बड़ी घड़ी 300/– रुपये मात्र में उपलब्ध हैं।

पैकिंग एवं डाक व्यय पृथक से देय होगा।

–: प्राप्ति स्थान :–

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1
दूरभाष: 23360150, 23365959,
टेलिफैक्स : 011–23343737,
Email : aryasabha@yahoo.com
Website : delhisabha.com

आर्य संस्थाएं इतिहास लेखन हेतु जानकारियां भेजें

1. अपनी आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में 10–15 पंक्तियां लिखें जिसमें उस समय के क्षेत्र की परिस्थितियां, किन के घर से आरम्भ हुआ, किन्होंने किया, आदि का भी उल्लेख हो।
2. आर्यसमाज की स्थापना की तिथि, संस्थापकों के नाम एवं परिचय सहित – यथासम्भव रिकार्ड के अनुसार हो तो बेहतर है।
3. आर्यसमाज के वर्तमान भवन के बृहद् तीन–चार चित्र अलग–अलग कोण से खींचकर भेजें जिसमें आर्यसमाज का नामपट्ट लिखा हिस्सा आ जाए, तो बेहतर है। (चित्र सीडी में भी भेजें)
4. आर्यसमाज द्वारा वर्तमान में संचालित समस्त गतिविधियों की जानकारी।
5. स्थापना से अब तक किए गए मुख्य कार्यों का विवरण।
6. वर्तमान के तीन पदाधिकारियों (प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष) के नाम व फोटोग्राफ एवं महिला आर्यसमाज के भी उपरोक्त तीन पदाधिकारियों के फोटोग्राफ। (फोटो सीडी में भी भेजें) प्रत्येक फोटोग्राफ के पीछे उनका नाम अवश्य लिखा हो।
7. स्थापना काल से अब तक रहे अधिकारियों की सूची कार्यकाल सहित (यदि सम्भव हो तो)
8. वे कार्य जिनसे आपकी आर्यसमाज ने विशेषता प्राप्त की हों।
9. यदि कोई महान् व्यक्तित्व आपकी आर्यसमाज से सम्बन्धित रहे हों तो उनका विवरण परिचय अवश्य दें।
10. आर्यसमाज से सम्बन्धित कोई ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज जिसकी फोटोप्रति छापना इतिहास की दृष्टि से आप उत्तम समझें तो उसकी साफ्ट कॉपी करके अवश्य भेजें।

नोट: इन सबके अतिरिक्त अपनी आर्यसमाज के बारे में कुछ विशेष जानकारी/टिप्पणी देना चाहें तो उसे भी अलग से अवश्य ही दे देवें।

विशेष नोट: 1. इतिहास ग्रन्थ में प्रत्येक आर्यसमाज के विवरण के लिए दो पृष्ठ आरक्षित होंगे। जिसमें आधे पृष्ठ पर फोटो तथा शेष डेढ़ पृष्ठ पर आर्यसमाज का उपरोक्त वर्णन सम्पादित कर प्रकाशित किया जाएगा। 2. यदि समाज 50 वर्ष से अधिक पुराना है, वह चाहे तो अतिरिक्त शुल्क 750/– रुपये देकर तीसरा पृष्ठ भी ले सकते हैं। 3. ग्रन्थ का आकार 20×30×8 होगा। फोटो रंगीन प्रकाशित होंगे। इतिहास लेखन समिति ने प्रत्येक आर्यसमाज को 1000/– रुपये प्रति पृष्ठ की दर से शुल्क निर्धारित किया है। यह ग्रन्थ लगभग 700–800 पृष्ठों का होगा तथा दो भागों में प्रकाशित होगा। दोनों भागों का अनुमानित मूल्य 250/– रुपये होगा। यह ग्रन्थ आर्यसमाजों के इतिहास लेखन की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। 4. इस ग्रन्थ में जानकारी भेजने वाली प्रत्येक आर्यसमाज/संस्था को ग्रन्थ की 5 प्रतियां निःशुल्क दी जाएंगी। 5. अपने पत्र एवं जानकारियां '**संयोजक, दिल्ली आर्यसमाज इतिहास लेखन समिति**' – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 के पते पर शीघ्रातिशीघ्र 31 दिसम्बर, 2009 से पूर्व भेज देवें।

– ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान *विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)*

नशामुक्ति, शाकाहार आन्दोलन के प्रणेता स्व० श्री केवलचन्द नाहर की स्मृति में

''मानव तू मानव बन'' पुस्तिका

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी 1975 हो या आर्यसमाज दीवानहॉल, दिल्ली का खुले मैदान में वार्षिकोत्सव। नशा मुक्ति, मांसाहार व सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध बड़े–बड़े पोस्टरों, पोट्रेट, साहित्य के माध्यम से जन–जागृति करने वाले समाजसेवी श्री केवल चन्द नाहर अब नहीं रहे। उन्होंने भारत सरकार की पाठ्य पुस्तकों से अण्डा खाना, मांसाहार हटवाया। देशभर के विद्यालयों, समाचार पत्रों में नशे, व अभक्ष्य पदार्थों के प्रति चेतना जागृतकर वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध किया कि मांसाहार की अपेक्षा शाकाहारी भोजन सर्वश्रेष्ठ है। देश–विदेश के बुद्धिजीवियों से नियमित सम्पर्क करने, नशा व मांसाहार मुक्ति के लिए सदैव संघर्ष रत रहे।

उनके परिवारजनों ने उनकी अन्तिम इच्छानुसार संग्रहित पुस्तिका "मानव तू मानव बन" प्रकाशित की है, जो सुन्दर आर्ट पेपर पर छपी है, मात्र 5 रु० का डाक टिकट भेजकर निःशुल्क नमूना मंगवा सकते हैं। सम्पर्क करें:–
नव जीव दया मंडल, 1443, गली छिपियां, मालीवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली –6

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1 में 5, 10 एवं 20 किलो के पैकेटों में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

पुण्य स्मरण

आर्यसमाज की सेवा में समर्पित स्व. माता सरला आर्या जी

सं0 1998 के क्वार माह की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को माता धन्नो देवी एवं पिता ला. केशोराम जी के घर में सबसे बड़ी सन्तान के रूप में जन्म लेने वाली बालिका का नाम माता–पिता ने बड़े चाव और भाव के साथ सरला रखा। मातापिता की सरल सोच एवं परिवार में सबसे बड़ी पुत्री होने के कारण सरल चित्त की सरला सात बहनों व एक भाई को लाड प्यार के साथ पालन करते हुए किशोर वय में ही माता की भूमिका निभाने लगी। इस महनीय भूमिका का निर्वाह करते हुए सरला देवी को अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़ देनी पड़ी। यहाँ से उनके हृदय में त्याग का अंकुर फूटने लगा था। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर जनपद के कस्बे कैराना में रहने वाले इस परिवार ने सरला जी का विवाह कैराना के ही लाला जगन्नाथ प्रसाद एवं श्रीमती लाली देवी के ज्येष्ठ पुत्र श्री जय प्रकाश जी के साथ कर दिया। श्री जय प्रकाश जी एम.आई.एस. में इन्जीनियर थे। सेवाकाल में इनका स्थानान्तरण होता रहता था। 1978 में जब इनका प्रवास अखनूर (कश्मीर) में था तो इनका परिचय आर्यसमाज से हो गया। आर्यसमाज से परिचय पाकर इनके जीवन की दिशा ही बदल गयी। लगता है इनके हृदय में वैदिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा व परोपकार के प्रति ललक दबी पड़ी थी। आर्यसमाज के सान्निध्य में वह निष्ठा व ललक व्यवहार के धरातल पर फूट पड़ी। वैदिक सिद्धातों का रंग इन पर इतना शीघ्र व ऐसा गहरा चढ़ा कि परिवार में नित्य यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ जैसा श्रेष्ठतम कर्म जिस परिवार में हो वहाँ परिवार के संस्कार श्रेष्ठ हो ही जाते हैं। परिणामतः इनके पुत्र–पुत्रियाँ आर्यसमाज के प्रति व वैदिक सिद्धांतों के प्रति गहरी आस्था रखने लगे।

जीवन की झलकियाँ

वैदिक आदर्शों के प्रति पूर्णतः समर्पित माता सरला देवी जी अपने जीवन से नए आदर्श स्थापित करने लगीं। 1995 में इन्होंने संकल्प लिया कि प्रतिदिन किसी एक परिवार में यज्ञ कराना है। कुछ विशेष परिस्थिति के अपवाद को छोड़कर उन्होंने जीवनभर यह संकल्प निभाया। अपने घर नित्य यज्ञ करना उसमें पड़ोस के बच्चों को सम्मिलित करना तथा जिसने नित्य यज्ञ करने का आश्वासन दिया, उसे यज्ञ कुण्ड भेंट करना, उनके इन गुणों के कारण वे 'हवन वाली माता जी' के नाम से प्रसिद्ध हो गईं। माता जी के ऐसे दुर्लभ सद्‌गुण हैं जो आज के युग में कहीं नहीं दिखते। निकटवर्ती सभी समाजों के समस्त कार्यक्रमों में जाना, पूरा समय देना तथा आर्य वीरागंना दल के शिविरों में दिन–रात रह कर बालिकाओं के योग–क्षेम की जिम्मेदारी सम्भालना उनका विशेष गुण रहा। पंजाबी बाग आर्यसमाज के आर्य वीरागंना दल के शिविर में फूड पॉयजनिंग की शिकार होकर अस्पताल जाना पड़ा, इतने पर भी अस्पताल से सीधे शिविर स्थल गईं। परिजनों व हितैषियों के बार–बार कहने पर भी आप घर नहीं गईं।

–: सहयोगी स्वभाव :–

गुजरात का भूकम्प हो या उड़ीसा की सुनामी, उत्तरकाशी या तमिलनाडु जहाँ कहीं भी प्राकृतिक प्रकोप के कारण मानवता पीड़ित हुई, वहीं माता जी ने खुले हृदय से आर्थिक सहयोग किया। अजमेर की परोपकारिणी सभा हो, टंकारा का वार्षिक उत्सव अथवा उदयपुर के नवलखा महल का वार्षिक आयोजन, माता जी सब जगह बड़े उत्साह से जातीं, बड़ी श्रद्धा से रहतीं तथा बड़ी उदारता से दान देती थीं। वे घर से बाहर निकलती तो छोटा–मोटा साहित्य साथ लेकर चलतीं। रास्ते में जो भी मिले आर्य साहित्य बाँटना उनका स्वभाव था। यहाँ तक कि कभी हास्पीटल में चैक अप आदि के लिए गईं तो डॉक्टर व नर्स से लेकर रोगियों के साथ होने वाले परिजनों तक को योग्य साहित्य अवश्य देतीं। यहाँ तक कि सफाई कर्मचारियों को भी साहित्य देना नहीं भूलतीं। बस में यात्रा करते समय चालक–परिचालक को स्टीकर देतीं कि लो इसे बस में चिपका देना। ऐसी प्रचार की लगन आज हम सबके लिए निश्चित ही प्रेरणा दायक है।

–: उनका बिछुड़ना :–

आर्यसमाज के प्रति दीवानगी के चलते माता जी कई बार अपने स्वास्थ्य व शारीरिक क्षमताओं का भी ध्यान नहीं रख पाती। विगत कुछ वर्षों से कैंसर के रोग से ग्रस्त थीं, मगर जीवन में उत्साह व कार्य करने की क्षमता पर उन्होंने कभी रोग को प्रभावी नहीं होने दिया। नियमित रूप से उनका उपचार चल रहा था।

इसी बीच 6, 7, व 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा का स्वामी दयानन्द–गुरु विरजानन्द सरस्वती के 150वें मिलन समारोह को निकट आता देख माता जी ने अपने नियमित उपचार में दो–तीन दिन का अन्तर कर लिया। उनकी इच्छा थी कि इस ऐतिहासिक समारोह में मैं अवश्य सम्मिलित होऊँ। माता जी को इनकी पुत्री विभा आर्या ने न जाने के लिए कहा तो माता जी ने उत्तर दिया कि तुम्हें तो मेरा साहस बढ़ाना चाहिए। परिजनों के परामर्श व स्वास्थ की उपेक्षा करके वे वहाँ श्रद्धा वश गईं और वहाँ उनका स्वास्थ्य सन्तुलित न रह सका। स्वास्थ्य बिगड़ता देख उन्हें 7 नवम्बर की रात 12 बजे ही मथुरा से दिल्ली लेकर चल दिए। लगभग 3.30 बजे इन्हें राजीव गाँधी कैंसर हास्पीटल में भर्ती करा दिया। उपचार के दौरान ही 9 नवम्बर को प्रातःकाल 2 बजे के लगभग उन्होंने अपना तन का पिंजरा खाली कर दिया। 9 नवम्बर को ही दोपहर 12 बजे आर्य जगत् के विद्वानों व संन्यासियों की उपस्थिति में वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार निगमबोध घाट पर किया गया। माता जी का सम्पूर्ण जीवन हम सबके लिए अत्यन्त ही प्रेरणादायी है। हम सभी आर्यजन भावपूर्ण हृदय के साथ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्‌गति तथा शोकाकुल परिजनों को इस आघात को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे।

– ब्र० राजसिंह आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

शोक समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य को मातृशोक

दैनिक याज्ञिक माता सरला आर्या नहीं रहीं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी की पूज्या माताजी श्रीमती सरला आर्या जी का सोमवार दिनांक 9 नवम्बर, 2009 को प्रातः 2 बजकर 10 मिनट पर राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट, रोहिणी में निधन हो गया। वे 69 वर्ष की थीं। माताजी कुछ समय से अस्वस्थ चल रही थीं। माताजी मथुरा आर्य महासम्मेलन में भाग लेने गई थीं, जहां से अचानक तबीयत बिगड़ने पर उन्हें दिल्ली लाया गया।

माताजी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट, दिल्ली पर किया गया। इस अवसर पर आचार्य बलदेव, सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, आचार्य विजयपाल, दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष एवं विधायक डॉ. रमाकान्त गोस्वामी, एवं दिल्ली और दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों के सभी प्रमुख आर्यसमाजों एवं आर्यसंस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सैंकड़ों आर्यजनों ने वहां पहुंचकर माताजी को अन्तिम विदाई दी।

आदरणीया माता जी प्रतिदिन किसी न किसी परिवार में यज्ञोपरान्त ही भोजन ग्रहण करती थीं। उन्होंने अपने वैदिक संस्कारों को न केवल अपने परिवार में अपितु समाज में प्रचारित–प्रसारित करने के लिए कार्य किया। वे अपने पीछे दो सुपुत्रों श्री विजेन्द्र आर्य एवं श्री विनय आर्य, तीन सुपुत्रियों श्रीमती विजयालता, आभा गुप्ता एवं विभा आर्या (सभी विवाहित) का भरा–पूरा परिवार छोड़ गई हैं। माताजी एक समर्पित, धुन की धनी एवं कर्मठ आर्य महिला के रूप में जानी जाती थीं। माता जी सदैव आर्यसमाज द्वारा आयोजित छोटे बड़े कार्यक्रमों, शिविरों, जलसे–जुलूसों, पभातफेरियों में बिना किसी पद के भी पूर्ण श्रद्धा से सेवा कार्य सम्भालती थीं और हमेशा ही औरों को प्रेरणा प्रदान करती थीं। सभी स्थानों पर वैदिक साहित्य – ओ३म् स्टीकर, ओ३म् ध्वज, हवन कुण्ड आदि बांटते रहना उनके विशेष संकल्पों में था।

समस्त आर्यजगत इस घटना से शोक ग्रस्त है एवं पारिवारिक जनों को इस दुख को सहन करने की सामर्थ्य देने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 15 नवम्बर, 09 को आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली में मध्याह्न 2.30 से 4.30 बजे तक आयोजित होगी।

वैवाहिक विज्ञापन – विशेष सूचना

महर्षि दयानन्द जी की यह दृढ़ मान्यता है कि विवाह हमेशा सदृश अर्थात् परस्पर समान गुण, कर्म, स्वभाव वालों का ही होना चाहिए। क्योंकि **ऐसे विवाह से ही कुल में प्रसन्नता रहती है और उसी कुल में आनन्द, लक्ष्मी और कीर्ति निवास करती है।**

आज हमारी पारिवारिक अशान्ति, कलह, दु:ख और वैमनस्य का मूल कारण महर्षि के इस वचन का पालन न करना ही है। महर्षि ने तो मनु के प्रमाण से बलपूर्वक यहाँ तक कह दिया कि "चाहे लड़का–लड़की मरणपर्यन्त कुमार (अविवाहित) रहें परन्तु असदृश अर्थात् परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाववालों का विवाह कभी न होना चाहिए।"

अत: सुख, शान्ति प्रसन्नता और आनन्द चाहने वालों का परम कर्तव्य है कि वे ऋषियों के निर्देश का पालन करते हुए गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परस्पर विवाह रचायें।

इधर काफी दिनों से देश विदेश के कतिपय आर्य परिवारों की यह मांग रही है कि आर्य संदेश में वैवाहिक विज्ञापन का स्थायी स्तंभ प्रारंभ किया जाये, **जिससे कि आर्य परिवारों को श्रेष्ठ, सुशील, निर्व्यसनी शाकाहारी, धार्मिक वर अथवा वधू के चयन में अत्यन्त सुगमता हो।** इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अब 'आर्यसन्देश' में वैवाहिक विज्ञापन सेवा प्रारंभ की जा रही है। सभी आर्य जनों से निवेदन है कि इस सेवा का लाभ उठाकर अपने सुखमय परिवार की आधार शिला बनावें।

ध्यान दें :– 'आर्य सन्देश' में अपने वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए विज्ञापन में 'जाति बन्धन नहीं', और 'आर्य वर/आर्य कन्या की आवश्यकता है' ऐसा देना अनिवार्य है। एक अंक के लिए निर्धारित विज्ञापन शुल्क 150/–, दो अंक के लिए 200 तथा लगातार तीन अंकों के लिए 300/– रुपये देय होगा।

– सम्पादक

ऋषि शिरोमणि का अभिनन्दन

हे जगत्वन्द्य ऋषि दयानन्द, भूमण्डल के उपकारी।
सुनकर प्रबल हुंकार तुम्हारी, काँप उठी मथुरा काशी।।
अनन्तानन्द प्रभु की प्रेरणा, और अपने शुभकर्मों के कारण।
जन्मी टंकारा में शुद्धात्मा इक, मूल नाम को कर धारण।।
शंकर के मूल की जिज्ञासावश, मूलशंकर का अवतार हुआ।
भारत माँ के भाग्य खुले, और वैदिक ज्ञान प्रकाश हुआ।।
फाल्गुन कृष्ण दशमी को, टंकारा का सौभाग्य जगा।
मूल तारक के दर्शन से, भारत का अज्ञान तिमिर भगा।।
बहुकष्टों को सहकर भी, आनन्द दया का देकर के।
ऋषि दयानन्द ने वेदों का, महत्त्व बताया यह कह के।।
'वेदोऽखिलो धर्ममूलम' यह विचार सब ऋषियों का।
स्वत: प्रमाण हैं वेद चार, यह प्रचार सब गुणियों का ।।
यथा ज्योति दिवाकर से, लेते सब ग्रह उपग्रह तारे।
तथैव वेदों के ज्ञान बिना, फीके लगते थे ग्रन्थ हमारे।।
ये वेद प्रभु की वाणी है, त्रिकालातीत और अनुपम रचना।
इनका सब स्वाध्याय करें, पर कभी न तुम इनसे बचना।
जब तक इस भूमण्डल में, वैदिक ज्ञान प्रचार रहा।
तब तक सब लोग सुखी थे, और फैला विज्ञान महा।।
उस परम ज्ञानी ऋषि शिरोमणि का करते है हम अभिनन्दन।
था समुचित ज्ञान का अध्येता, और भारत भाल का था चंदन।।

– हरि ओ३म् शास्त्री, फरीदाबाद (हरियाणा)

वर चाहिए

गोरी, सुन्दर, सुसंस्कृत, मेधावी, आयु 26 वर्ष, कद 5 फुट 7 इंच, प्रसिद्ध बिजनस स्कूल से मैनेजमेंट की डिग्री प्राप्त, दक्षिण दिल्ली के प्रतिष्ठित, सम्पन्न, क्षत्रिय आर्य परिवार की कन्या हेतु शाकाहारी, सम्मानित परिवार का सुयोग्य, लम्बा, आकर्षक व्यक्तित्व का अच्छे संस्थानों से इंजीनियर तथा एम.बी.ए. वर चाहिए। जाति बन्धन नहीं। कृपया विस्तृत जानकारी भेजने का कष्ट करें।

– श्री एस. पी. सिंह

सी–521, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली–110024

Email : ger983@gmail.com, मो. 09891795601

उपयुक्त वधू चाहिए

46 वर्षीय 5'5'' तलाकशुदा, सरकारी सेवारत, आय 2.5 लाख वार्षिक, अंडर ग्रेजुएट, स्वस्थ, अपना मकान, को सेवाभाव युक्त, शिक्षित, जरूरतमंद (Caring, Educated, Needy) 32–38 वर्षीय विधवा, तलाकशुदा अथवा अविवाहित वधू की आवश्यकता है। कोई जाति बन्धन नहीं। सम्पर्क करें। *– गुप्ता जी – 9213107131*

वधू चाहिए

राजस्थान कोटा के एक आर्य परिवार के सुपुत्र नाम मनीष, आयु 30 वर्ष, रंग गेहूंआ, कद 5'6'', शैक्षिक योग्यता बी.एस.सी, एम.बी.ए., प्राईवेट सर्विस, पिता जल संसाधन विभाग (राजस्थान) में अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता को आर्य परिवार की कन्या की आवश्यकता है। आर्यपरिवार को प्राथमिकता दी जाएगी। कोई जाति बन्धन नहीं। सम्पर्क करें – **श्री रामप्रसाद गुप्ता 'याज्ञिक'**

एम.पी.बी.– 56, महावीर नगर–1, कोटा – 324005 (राज०)

दूरभाष : 0744–2427508, 09414745423

आर्य वधू चाहिए

एक आर्य परिवार के सुपुत्र नाम शरद अग्रवाल, आयु 27 वर्ष, रंग गोरा, इकहरा बदन, कद 5'8'', शैक्षिक योग्यता एम.एस.सी, मैडिकल कम्पनी में एम. आर. आय 15 हजार मासिक, दो भाई, बहन कोई नहीं, पिता अध्यापक को आर्यपरिवार की कन्या की आवश्यकता है। जाति एवं दहेज रहित विवाह। सम्पर्क करें **– दयाशंकर आर्य, उत्सव गिफ्ट गैलरी, बड़ा बाजार, गढ़ मुक्तेश्वर (गाजियाबाद) दूरभाष : 05731–221211, 9259624025**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अरमान संस्था के तत्त्वावधान में

तिहाड़ बन्दीगृह 5 में कार्तिक पूर्णिमा यज्ञ सम्पन्न

2 नवम्बर, 2009 तदनुसार सोमवार कार्तिक पूर्णिमा 2066 को आर्यसमाज, जनकपुरी सी–3 के पुरोहित आचार्य प्रणव जी तथा दिल्ली सभा के आचार्य हरिप्रसाद जी द्वारा सम्मिलित रूप से युवा बन्दियों से यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

प्रथम आचार्य प्रणव जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी कार्य को बार–बार करने पर हमारी आदत बन जाती है। जैसे गिनती, पहाड़े, पाठ, वेद मंत्र बार–बार दोहराने पर याद हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार जिसका हम चिन्तन करते हैं उसके संस्कार भी उतने गहरे बन जाते हैं। संस्कृत के महान् विद्वान मण्डन मिश्र के निवास पर वेद मंत्रों का पाठ सुन–सुनकर उनके तोते भी मंत्र बोलने लगे। कसाई के घर में पलने वाला तोता बुरी–बुरी गालियाँ देता है। पानी की बूँद कमल पत्र पर सुन्दर नग, सीपी में मोती, केले में कपूर, बाँस में पड़ने पर बंस लोचन बन जाती है। यह सब सत्संग और कुसंग का प्रभाव है।

बन्दी बच्चों से पूछा गया, **'आप कौन संग पसन्द करोगे?'** सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया 'सत्संग'। सभी ने हाथ उठाकर प्रतिज्ञा की कि वे शेष जीवन में अच्छे कार्य करेंगे। आचार्य जी ने अपनी विचारों की शक्ति को पहचानने और ऊँचा लक्ष्य बनाने के साथ–साथ ईश्वर से गायत्री मंत्र के जाप से सद्बुद्धि देने की प्रार्थना करने की बात भी कही।

श्री सन्तकुमार तोमर जी द्वारा 'प्रभू न विसारिये, हिम्मत न हारिए' भजन गाने पर सभी उपस्थित जन तालियाँ बजा–बजा कर झूम उठे। आचार्य हरि प्रसाद जी ने निरोग रहने के लिए सीधे बैठकर प्राणायाम करने, प्रभू के पवित्र नाम 'ओ३म्' का जाप करने की बात कही; ताकि परमात्मा की दया मिले। दया को उलटने पर 'याद' बनता है। अत: ईश्वर को याद करें। आपने आगे कहा कि शरीर को तन भी कहते हैं। तन और मन का अटूट संबंध है। बुखार आने पर मीठा कड़वा लगता है और सांप के काटने पर तन में विष के प्रभाव से कड़वा नीम भी मीठा लगता है। अत: तन में विकार आने पर मन भी खराब हो जाता है और उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है। विचारों में ग्रहण लग जाने पर पैर डगमगाने से हम चूक जाते हैं। ईश्वर हम सबका पिता है। हम आपस में भाई–भाई हैं। अत: हम आपस में नहीं लड़ेंगे। लड़ना पड़ा तो पाकिस्तान से लड़ेंगे। आपस में लड़कर न परमात्मा को नाराज करेंगे और न भारत माता को बदनाम। अन्त में बन्दी बच्चों द्वारा 'इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना' गीत गवाया और 'असतो मा सद्गमय'......की प्रार्थना अर्थ सहित कराई और 'पूर्णमासी के चाँद की तरह चमको' का आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज सी–3 जनकपुरी के प्रधान श्री शिव कुमारमदान जी ने बच्चों को पिछली गलती न दोहराने की सलाह दी। उनके मंत्री श्री रमेश जी ने सभा का संचालन किया। यज्ञ समिति के प्रबंधक आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर ने 'सत्संग और कुसंग में महान अन्तर जान, गंधी और लोहार की बैठो देख दुकान' कहकर बच्चों से बीड़ी पीने, मांसाहार करने की हानियाँ बताकर उनसे दूर रहने की प्रतिज्ञा कराई। आर्यसमाज हनुमान रोड, दिल्ली द्वारा भेजे गए साहित्य का वितरण कराया। सभी का धन्यवाद किया। इस बार प्रसाद वितरण कारागार के डिप्टी सुप्रिन्टेन्डेन्ट श्री सुभाष जी की ओर से किया गया। शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

– आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर
प्रबंधक यज्ञ समिति (22026541)

आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली

20वां वार्षिकोत्सव

16 से 22 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 9 बजे
ब्रह्माः आचार्य विकास तिवारी
भजन : पं. योगेश दत्त आर्य
प्रवचन : डॉ. योगेन्द्र कुमार शास्त्री

आर्य महिला सम्मेलन : 20 नवम्बर

पूर्णाहुति एवं आर्य सम्मेलन

रविवार 22 नवम्बर, 2009

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– बलदेव जिन्दल, प्रधान
रवि चड्ढा, मन्त्री

आर्यसमाज राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के

55वें वार्षिकोत्सव पर

अथर्ववेदीय यज्ञ एवं वेद प्रवचन

18 से 22 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.30 से 9 बजे
ब्रह्माः आचार्य उषर्बुध जी
भजन : श्री नरेन्द्र वशिष्ठ
भजन–प्रवचन : सायं 7 से 9 बजे

आर्य महिला सम्मेलन : 18 नवम्बर

यज्ञ पूर्णाहुति : 22 नवम्बर, 2009

समय : प्रातः 6.30 से 1 बजे तक

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

– जगदीश आर्य, प्रधान
ओम प्रकाश अरोड़ा, मन्त्री

पं. शोभाराम प्रेमी जी का अभिनन्दन

आर्यसमाज की लगातार 75 वर्ष से भजनोपदेश द्वारा सेवा करने वाले सुप्रसिद्ध संगीतकार भजनोपदेशक पं. शोभाराम प्रेमी जी का मेरठ में प्रचार की हीरक जयन्ती पर अभिनन्दन किया जाएगा जिसमें उन्हें एक गाड़ी, अभिनन्दन ग्रन्थ, शाल एवं नकद राशि प्रदान की जाएगी। आर्यजन अधिकाधिक इस नेक कार्य में सहयोग प्रदान करें। 1100/– रुपये से अधिक दानराशि प्रदान करने वाले आर्यजनों के नाम अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित किए जाएंगे। अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट ***'पं. शोभाराम प्रेमी अभिनन्दन समिति'*** के नाम डी–25, डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली–24 के पते पर भेजें।

– ठाकुर विक्रम सिंह, प्रधान
धर्मवीर शास्त्री, संयोजक, 9968651795

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली

54वां वार्षिकोत्सव एवं सामवेदीय यज्ञ

12 से 15 नवम्बर, 2009

प्रभातफेरी : 10 एवं 11 नवम्बर, 09
यज्ञ : प्रातः 6 से 7.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन : श्रीमती शशि प्रभा आर्या

पूर्णाहुति एवं समापन समारोह

रविवार 15 नवम्बर, 2009

अध्यक्षता : महाशय धर्मपाल जी
मुख्यवक्ताः डॉ. महेश विद्यालंकार

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– दीनानाथ गुलाटी, प्रधान
चतुर्भुज अरोड़ा, मन्त्री

आर्यसमाज बैंक इन्कलेव, दिल्ली का

22वां वार्षिकोत्सव

11 से 15 नवम्बर, 2009

समापन समारोह : 15 नवम्बर, 09

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– जगदीश पाहुजा, प्रधान
राजेन्द्र मल्होत्रा, मन्त्री

आर्यसमाज पटेल नगर, नई दिल्ली का

55वां वार्षिकोत्सव

ऋग्वेदीय यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन

15 नवम्बर, 09 प्रातः 8 से 1.45 बजे

विशेष प्रवचन : आचार्य वागीश जी
वक्ता : आचार्य हरि प्रसाद जी एवं पं. अमरदेव जी

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– विजय कुमार भाटिया, प्रधान
पुरुषोत्तम आनन्द, मन्त्री

आर्यसमाज नेमदारगंज एवं जिला आर्य सभा बिहार के तत्वावधान में

भ्रांति निवारण समारोह एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ

10 से 15 नवम्बर, 2009

स्थान : दुर्गा मंडप प्रांगण, नेमदारगंज, नवादा

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– संजय सत्यार्थी, संयोजक

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का

87वें वार्षिकोत्सव

16 से 22 नवम्बर, 2009

ऋग्वेद यज्ञ : प्रातः 7.30–9.30 बजे
ब्रह्माः आचार्य हरि प्रसाद जी
ऋत्विक् : डॉ. कर्णदेव शास्त्री
भजन : श्री दिनेश दत्त जी

पूर्णाहुति एवं विशेष प्रवचन

रविवार 22 नवम्बर, 2009

प्रवक्ता : डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. सुषमा शर्मा एवं आचार्य हरि प्रसाद जी
विषयः देशोद्धारक महर्षि दयानन्द
नारी शिक्षा और महर्षि दयानन्द
वेदों में धर्म का स्वरूप

सभी आर्यजन सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल बनाएं।

– अरुण प्रकाश वर्मा, प्रधान
नरेन्द्र सिंह हुड्डा, मन्त्री

आर्यसमाज एल ब्लाक, आनन्द विहार, हरि नगर, नई दिल्ली का

34वां वार्षिकोत्सव

11 से 15 नवम्बर, 2009

यज्ञ : प्रातः 6.15 से 7.15 बजे
ब्रह्माः श्री कुंवरपाल शास्त्री
भजन : श्री उधम सिंह आर्य
वेद कथा : आचार्य शिवनारायण शास्त्री

समापन एवं आर्य महा सम्मेलन

15 नवम्बर प्रातः 7 से 1 बजे

मुख्य वक्ता : डॉ. अजय आर्य एवं श्री शिवनारायण शास्त्री
विषय : वेद विज्ञान
वेद का व्यावहारिक स्वरूप

सभी आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सपरिवार वेदामृत पानकर जीवन सफल कर एवं कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– वी. के. मल्होत्रा, प्रधान
महेन्द्र सिंह, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक 24, 26, 27 दिसम्बर, 2009

स्थान : – आर्यसमाज 'बी'–ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली–58

24 दिसम्बर : जूनियर्स (कक्षा 3 से 5 के बच्चे आयु 8 से 10 वर्ष)
समय : 4.00 बजे से 7.00 बजे तक (प्रतियोगियों को 3.30 बजे पहुँचना है)
26 दिसम्बर : मिडिल (कक्षा 6 से 8 के बच्चे आयु 11 से 13 वर्ष)
समयः 4.00 बजे से 7.00 बजे तक (प्रतियोगियों को 3.30 बजे पहुँचना है)

प्रत्येक ग्रुप के लिए गायन प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगता व ऑब्जेक्टिव पेपर पृथक–पृथक रहेगा

27 दिसम्बर : सीनियर्स (कक्षा 9 से 12 विद्यार्थी आयु 14 से 17 वर्ष)
भाषण प्रतियोगिता : "महर्षि दयानन्द का समाज उत्थान में योगदान"

निवेदक :– मृदुला चौहान (संचालिका) **अंजु बजाज** (सचिव)

शोक समाचार

श्री गोपाल आर्य को मातृशोक

आर्यसमाज हडसन लाइन्स, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली के प्रधान श्री गोपाल आर्य जी की पूज्या माताजी श्रीमती उदली आर्य का दिनांक 7 नवम्बर, 2009 की मध्यरात्रि उनके निवास स्थान पर अकस्मात् निधन हो गया। वे लगभग 87 वर्ष की थीं। माताजी का अन्तिम संस्कार उसी दिन निगम बोध घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ–साथ अनेक आर्यजनों एवं परिजनों ने उपस्थित होकर माताजी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

आदरणीया माताजी आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों, मान्यताओं से पूर्णतः ओतप्रोत एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उन्होंने अपने बच्चों को भी इन्हीं संस्कारों से दीक्षित किया। वे अपने पीछे एक भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

माताजी की स्मृति में शान्तिसभा/उठाला दिनांक 18 नवम्बर, 2009 को दोपहर 12 से 2 बजे तक उनके निवास स्थान :– ए–118, नेहरु विहार, दिल्ली–9 में आयोजित होगा।

स्वामी आर्यवेश को पितृशोक

आर्यजगत के युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के पूज्य पिताश्री महाशय अमरसिंह जी का गत 26 सितम्बर को 100 वर्ष की आयु में निधन हो गया। महाशय जी को गाने का विशेष शौक था। हारमोनियम बाजे का अभ्यास तो था तथा अनेक बार वे अपने अन्य साथियों के साथ भजनों के द्वारा वेद प्रचार में भी समय लगाया करते थे। उन्होंने दीर्घकाल तक गांव में आर्य कन्या पाठशाला का संचालन किया। सन् 1957 में हिन्दी सत्याग्रह में अपने गांव से 33 लोगों के जत्थे को लेकर जेल गए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

सत्यार्थप्रकाश की परीक्षाएं दें

ऋषि दयानन्दकृत सर्वोत्तम ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के पठन–पाठन से जहाँ धर्म का सच्चा स्वरूप विदित होता है और नाना मत–मतान्तरों की वेद विरुद्ध मान्यताओं का पता लगता है, वहाँ अन्य अंधविश्वासों से भी छूटने का सही रास्ता दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए आर्य युवक परिषद्, दिल्ली ने गत 47 वर्षों की भाँति इस वर्ष भी अक्टूबर माह के अन्तिम रविवार को अखिल भारत स्तर पर सत्यार्थप्रकाश सम्बन्धी चार प्रकार की परीक्षाओं का आयोजन किया है। ये परीक्षाएँ सत्यार्थ–रत्न, सत्यार्थ–भूषण, सत्यार्थविशारद व सत्यार्थ शास्त्री हैं।

इन परीक्षाओं में अधिक से अधिक संख्या में परीक्षार्थियों को बैठाने की प्रेरणा देकर नई पीढ़ी को राष्ट्र–प्रेमी धर्मावलंबी और देश के सुयोग्य नागरिक बनने का अवसर प्रदान करें। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

– ओम प्रकाश, मंत्री, आर्य युवक परिषद् दिल्ली
एच–64, अशोक विहार, फेज–1, दिल्ली–110052

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

9 नवम्बर, 2009 से 15 नवम्बर, 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक १२/१३-११-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए, युवाओं को साथ जोड़ने के लिए, देश और समाज में पुनः वैदिक मान्यताओं के प्रचार के लिए, देश–भक्त और महर्षि मिशन के सिपाही तैयार करने के लिए, भारतीय जनमानस को पुनः झकझोरने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म :–

"सत्य की राह" वीसीडी
केवल 25/– रुपये में

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें। आओ हम सब मिलकर महर्षि के सपनों का भारत बनाने में सहयोग करें। आओ हम सब देशभक्त बनकर पुनः विश्वगुरु भारत का सृजन करें।

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक **आर्य सन्देश**

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की समस्त जानकारियां।

आज ही सदस्यता प्राप्त करें

वार्षिक सदस्यता : 150/– आजीवन सदस्यता 750/–

प्रथम पृष्ठ का शेष

यह इतनी जड़ें जमा चुकी है कि कहीं भी स्पष्ट देखी जा सकती है। मजारों पर ऐसा सर्वत्र होता है। इससे बचने की शिक्षा एक कवि से लेकर कुरान के भाष्यकार तक को देनी पड़ रही है। मौलाना अशरफ अली व अल्ताफ हुसैन साहब की मानें तो इस्लाम में तो खुदा के नाम पर पीर पैगम्बरों का पूजने उनसे माँगने की प्रवृत्ति पैदा हो चुकी है। वन्देमारतम् में तो ऐसा कुछ नहीं है। ***वन्देमारतम् में मातृभूमि के उपकारों की चर्चा करते हुए उससे प्राप्त उपकारों के प्रति आभार प्रकट किया गया है, उसे मातृभूमि मानकर उसकी वन्दना की गई है।*** अच्छा होता हमारे प्रबुद्ध उलेमा इस्लाम में खुदा के स्थान पर पीर पैगम्बर व शहीदों को पूजने व उनसे नेमतें माँगने की प्रवृत्ति के विरुद्ध कुछ बोलते। इस्लाम को वन्देमारतम से कुछ हानि नहीं होने वाली, हाँ खुदा के स्थान पीर पैगम्बरों से माँगने की प्रवृत्ति बढ़ती रही तो इस्लाम के उच्च आदर्श उपेक्षित होते जायेंगे और इस्लाम का एकेश्वरवाद अपनी गरिमा नहीं बचा पाएगा। आज आवश्यकता है कि उलेमा इस्लाम के सच्चे स्वरूप को सामने लाएँ। जो जिहाद के नाम पर रक्तपात हो रहा है, इसका तथा एकेश्वरवाद के उच्च सिद्धांत को नुकसान पहुँचाने वाली प्रवृत्तियों का डटकर विरोध करें, तो वे इस्लाम की सच्ची सेवा व सुरक्षा कर सकेंगे।

– आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक',
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर